दिनांक :- 04-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड इतिहास

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- नौ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन तथा प्रथम विश्व युद्ध

पेरिस शांति-सम्मेलन के समय विधिक स्थिति

1919ई० के पेरिस शांति सम्मेलन से सुदूर पूर्व के बारे में जो भी निर्णय लिए गए उसकी पृष्ठ भूमि 1914ई० से 1918 ई० के बीच कई की घटनाएँ है। 1898 ई० में चीन का शांतुंग प्रदेश जर्मनी को 99 वर्ष के लिए पट्टे पर दिया गया था।

इस बीच उसे इस प्रदेश का हस्तान्तरण किसी अन्य शक्ति को नहीं करना था।

प्रथम विश्व युद्ध काल में जर्मनी के चीन स्थित प्रदेश कियाओचाऊ पर जापान का अधिकार हो गया। जापान कियाओचाऊ का विधिक स्वामी नहीं हो सकता था। क्योंकि जर्मनी को यह पट्टे पर तो चीन को मिला था और उसे इसके हस्तांतरण का अधिकार न था। वस्तुतः कियाओचाऊ पर तो चीन की संप्रभुता थी और वही उसका विधिक स्वामी था।

1915 ई० की संधि के फलस्वरूप शांतुंग की स्थिति मे महत्तवपूर्ण परिवर्तन आया। शांतुंग संधि द्वारा चीन और जापान के बीच यह समझौता हुआ कि यदि जर्मनी शांतुंग को जापान को देता है तो जापान उसे कुछ शर्तों पर चीन को लौटा देगा।

Scanned with CamScanner

प्रथम विश्व युद्ध में चीन की सहभागिता से इसके संबंधो में कुछ विधिक परिवर्तन आए। प्रथम चीन और जर्मनी के बीच सम्पन्न हुए सारी संधियो का अंत हो गया। अतएव यदि चीनने 1917 ई० मे जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तो 1898 ई० में शांतुंग प्रदेश के संबंध मे चीन और जापान के बीच संपन्न संधि का अंत हो गया। द्वितीय युद्ध की घोषणा के साथ चीन मे सारी जर्मन संपत्ति पर चीन का अधिकार हो गया। अब जर्मनी को पट्टे पर दिए गए प्रदेश पर चीन की संप्रभुता कायम हो गई।

पेरिस शांति सम्मेलन और सुदूर पूर्व

जनवरी 1919 ई० मे पेरिस मे शांति सम्मेलन

शुरू हुआ। चीन के विभिन्न राजनीतिक दल अपने
देश के हितों की रक्षा के लिए एक शिष्टमंडल
भेजने के लिए राजी हुए। चीनी प्रतिनिधियों
ने सम्मेलन में शांतुंग की माँग की तथा 1915 एवं
1918 ई० में शांतुंग के संबंध में चीन और जापान
के बीच संपन्न समझौता को निरस्त करने का
अनुरोध किया। इसके लिए उन्होंने अनेक तर्क
दिए। प्रथम चीन ने जैसे ही युद्ध में प्रवेश किया
इसका पहले वाला प्रदेश शांतुंग पर जर्मन अधि
कार समाप्त हो गया। द्वितीय 1915 ई० की संधि
चीन पर थोपी गई थी। युद्ध काल में चीन
के बलवादीकारों से जबरदस्ती उस पर हस्ताक्षर
करवाया गया था। तथा चीनी संविधान के अनुसार
संधि की संतुष्टि भी नहीं की गई थी

शाँति सम्मेलन शुरू होने के पूर्व ही जापान अपने अधिकारो, जिन्हे युद्ध काल मे मित्र राष्ट्रो ने वचन दिए थे, को बनाए रखने की योजना बनाने लगा। शांतुंग मे जापान के दावो के बारे में प्रेस को बहुत कुछ नही बतलाया गया। जापानी प्रतिनिधियो ने प्रजातीय समानता सिद्धांत पर भी बल दिया क्योंकि संयुक्त राज्य अमरीका के सहयोग और समर्थन के प्रति आशान्वित था। जापान के लिए यह चिंता का विषय था। उसके तर्को को संक्षेप मे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रथम, वह शांतुंग प्रांत और प्रशांत महासागर के उत्तर मे अपने अधिकारो की रक्षा चाहता था। उसे आशा थी कि शाँति सम्मेलन मे उसके इन अधिकारो को

Scanned with CamScanner

रक्षा की जाएगी क्योंकि उसे युद्ध में धन-जन का बड़ा नुकसान पड़ा था। साथ ही युद्ध काल में अंतर्मित्र राज्यों ने उसके अधिकारों की रक्षा करने का वचन दिया था। उसने इसकी अधिकारिक घोषणा शांति सम्मेलन में की। उसने यह भी कहा कि यदि कियाओचाऊ उसे जर्मनी से मिल जाता है तो वह उसे चीन को लौटा देगा। द्वितीय उसने सभी राष्ट्रों के समानता के दर्जे को स्वीकार करने तथा उनके देशवासियों के साथ न्याय पूर्ण व्यवहार करने की मांग की।

राष्ट्रपति विल्सन ने दूसरी माँग को अस्वीकार कर दिया क्योंकि इसका संबंध अप्रवास और इसके निर्बंधन से था। अतएव जापानियों ने अपनी प्रथम माँग की।

Scanned with CamScanner

मनवाने पर बल दिया जो उसके लिए महत्तव पूर्ण था। उन्होने एक मित्र के रूप में अपने दायित्वो का निर्वाह किया था, जर्मनी को सुदूर पूर्व से भगा दिया था तथा प्रशांत महासागर तथा यूरोपिय मार्ग की रक्षा की थी। इसमें जापान को जन-धन की अपार क्षति उठानी पड़ी थी। वे भी विजय का फल चखने के लि सुदूर आतुर थे। यदि उन्हें फल चखने का अवसर नही दिया जाता है तो वे राष्ट्र संघ में शामिल न होंगे तथा अलग थलग रह कर अपना रास्ता खुद तैयार करेंगे।

इटली ने फ्यूम (Fiume) के प्रश्न पर सम्मेलन से अपना नाता तोड़ लिया था। इसी तरह जापान ने भी सम्मेलन से अलग होने की धमकी दी।

Scanned with CamScanner